रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ५: तत्व-ज्ञान (ज्ञान का सारांश)

'तत्व-ज्ञान', 'ज्ञान का सारांश', उपमहाद्वीप की फ़लसफ़ी परंपरायों के ज्ञानवान की सोच की अमृतधारा। गुरु नानक कनफटे जोगियों के साथ 'गोरखमत्ता' में गूढ़ ज्ञान का गोष्ट रचा रहे हैं।

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥
गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥
बाबा जै घर करते कीरत होइ ॥
सो घर राख वडाई तोइ ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

उपमहाद्वीप की फ़लसफ़ी परंपरा के छह घरों के छह गुरुओं ने छह उपदेश दिये।
लेकिन सभी गुरुओं की एक ही इलाही ज्योत है जो अनेक भेषों में प्रगट होती है।
जिस फ़लसफ़े में कर्ता की कीर्ति होती है
वही सभी फ़लसफ़ों में सबसे महान है।
(राग आसा, गुरु नानक)

ऐतिहासिक रूप से, उपमहाद्वीप की संस्कृति की अनूठी ताकत खुली सोच से विचार-चर्चा और विविध फ़लसफ़ों को अपने अंदर समा लेना है। गुरु नानक का उपमहाद्वीप के फ़लसफ़े के छह पहलुओं - सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत को तस्लीम करना बताता है कि वह सोच की आज़ादी के कद्रदान थे। वह स्वयं वहदत के नज़रिये को उत्तम मानते थे।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने हरिद्वार से कोटद्वार, श्रीनगर, केदारनाथ, बद्रीनाथ और रीठा साहिब के रास्ते नानकमत्ता का सफ़र किया। सबसे पहले वह कोटद्वार गए।

हरिद्वार शहर को भगवान का प्रवेश द्वार माना जाता है क्योंकि यह हिमालय के पहाड़ों की तलहटी में स्थित है जिसका उल्लेख पौराणिक कथाओं में मिलता है।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर हम हरिद्वार से कोटद्वार जा रहे हैं।

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com

अमरदीप सिंह: कोटद्वार, कोह नदी के किनारे शिवालिक की पहाड़ियों की तलहटी में बसा हुआ है। पौड़ी का पहाड़ी क्षेत्र शुरू होने से पहले यह आख़िरी कस्बा है।

कोटद्वार में हम पहाड़ की चोटी पर बने सिद्धबली मंदिर जा रहे हैं। गुरु नानक के समय यह 'नाथ पंथ' संप्रदाय का पूजा स्थल था जो दसवीं शताब्दी के रूहानी रहबर गुरु गोरखनाथ के अनुयायी थे। उस समय इस संप्रदाय की मान्यता भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफ़गानिस्तान में फैली हुई थी। उन्हें 'जोगी' और 'सिद्ध' भी कहा जाता था। उनमें से कुछ कान बिंधवा कर मुंद्रा पहनतेy थे जिस कारण उन्हें 'कनफटे' भी कहा जाता था।

गुरु गोरखनाथ और उनके पूर्ववर्ती गुरु मत्स्येंद्रनाथ का समय गुरु नानक से बहुत पहले का था। ऐतिहासिक 'जन्माखियों' की कलाकृतियों में गुरु नानक को आमतौर पर इन दोनों के साथ संवाद करते दिखाया जाता है। दरअसल इन कलाकृतियों में गुरु नानक को 'कनफटे जोगी' संप्रदाय की बाद की पीढ़ियों के साथ संवाद करते हुए दिखाया गया है।

सिद्धियों से भरमाये और जोग की बंदिशों में बंधे नाथ पंथी अहंकार के शिकार थे। उनके इस व्यवहार को देखकर गुरु नानक ने गाया,

सो जोगी जो जुगत पछाणै ॥
गुर परसादी एको जाणै ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

सच्चा योगी एकता के सार को पहचानता है।
विवेक से संपन्न मनुष्य ही वहदत को समझता है।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

ज्ञान की प्राप्ति के साथ मनुष्य को अहंकारी नहीं बल्कि विनम्र होना चाहिए।

तारा सिंह नरोत्तम ने अठारह सौ चौरासी में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'गुर तीरथ संग्रह' में गुरु नानक के आगमन की स्मृति में कोटद्वार में निर्मित गुरुद्वारा चरणपादका का उल्लेख किया है। अब यहां ऐसा कोई स्थान नहीं है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने कोटद्वार से अलकनंदा नदी के किनारे-किनारे श्रीनगर का सफ़र किया।

अब हम हिमालय पहाड़ों में पौड़ी गढ़वाल के शहर श्रीनगर जा रहे हैं

अमरदीप सिंह: तारा सिंह नरोत्तम की पुस्तक 'गुर तीरथ संग्रह' के अनुसार गुरु नानक की श्रीनगर आने की याद में गुरुद्वारा चरणपादका का निर्माण किया गया था। वह गुरुद्वारा अठारह सौ तीन की बाढ़ में बह गया था। अब उस ऐतिहासिक स्थान की कोई निशानी नहीं मिलती।

श्रीनगर से चलते समय मैं विकास और विनाश के सदैव कला खेल के बारे में सोच रहा हूँ। विनाश के प्रत्येक कार्य में निर्माण का कार्य होता है।

जिस ते उपजै तिस ते बिनसै घट घट सच भरपूर ॥
(सिरी राग, गुरु नानक)

जिस में से विकास होना है उसी में से विनाश होना है। सृष्टि के हर पल, हर कण और हर पहलू मे सत्य है ।
(सिरी राग, गुरु नानक)

अस्तित्व का सार ही द्वैत के चक्र में समा जाना और होणी को स्वीकार करना है। यह विकास और विनाश का खेल है। विनाश में विकास का वासा है और विकास में विनाश का डेरा है।

गुरु नानक और भाई मरदाना श्रीनगर की पहाड़ियों से केदारनाथ की घाटी में पहुंचे।

हम मंदाकिनी नदी के किनारे केदारनाथ घाटी जाने के लिए पहाड़ चढ़ रहे हैं।

भीषण ठंड के चलते केदारनाथ घाटी का रास्ता छह महीने के लिए खुलता है। इस घाटी तक पहुंचने के लिए खूबसूरत कुदरती नज़ारों के बीच से सात-आठ घंटे की खड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है।

हिंदू मज़हब के ऊँची पहाड़ी वाले चार तीर्थों में केदारनाथ शामिल है। अन्य तीन जमनोत्री, गंगोत्री और बद्रीनाथ हैं। कहा जाता है कि 'महाभारत' का युद्ध जीतने वाले पांचों पांडव भाई भगवान शिव से माफ़ी मांगने के लिए केदारनाथ आए थे। इसलिए यात्री तमाम मुश्किलों के बाद भी माफ़ी मांगने केदारनाथ आते हैं ताकि उनकी रूह रोशन हो सके।

क्या तीर्थ स्थान की यात्रा से ही क्षमा याचना हो जाती है?

जैसा करे सु तैसा पावै ॥
आपि बीज आपे ही खावै ॥
(राग धनासरी, गुरु नानक)

हमें अपने कर्मों का फल मिलता है।
जैसे हम अपने बोए की फ़सल लेते हैं।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

हमारे इच्छाएं रचनात्मक या विनाशकारी परिणामों में ज़ाहिर होती हैं। गुरु नानक ने कहा कि जब मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है तो क्षमा मांगने का कार्य भी मानव मन के प्रयासों से ही सिद्ध होता है।

अमरदीप सिंह: हम इस समय केदारनाथ मंदिर में हैं जो ग्यारह हज़ार सात सौ पचहत्तर फीट की ऊंचाई पर है। 'केदार' का अर्थ है खेत, और 'नाथ' का अर्थ है भगवान। यह घाटी भगवान के खेतों की नुमाइंदगी करती है। गुरु नानक और भाई मरदाना ने भी इस घाटी का दौरा किया। उनके यहां आने की कोई भौतिक निशानी नहीं है।

केदारनाथ भगवान शिव का मंदिर है।

ओम का निशान हिंदू मज़हब में त्रिमूर्ति का प्रतिनिधि है। ब्रह्मा सृजन करते हैं, विष्णु सहारा देते हैं और शिव संहार करते हैं। गुरु नानक वहदत की वकालत करते थे। उन्होंने हाज़रा-हज़ूर सृजनहार की नुमाइंदगी करने के लिए 'ओंकार' के आगे एक लगाया, जो पैदा करता है, सहारा देता है और विकास करता है।

साचा सच सोई अवर न कोई ॥
जिन सिरजी तिन ही फुन गोई ॥
जिउ भावै तिउ राखहु रहणा तुम सिउ किआ मुकराई हे ॥
(राग मारु, गुरु नानक)
सर्वव्यापी सृजन ही हक़ीक़त है इसके बिना दूसरा कोई सत्य नहीं।
यह, जिसने सृजना बनाई है उसी ने फ़ना कर देनी है।

उसने सब कुछ अपने हुकम में चलाया है। उसके साथ कया दलील हो सकती है?
(राग मारु, गुरु नानक)

मानव मन पर सीमाओं का पर्दा गिरा हुआ है जिसके कारण उसे वहदत के विशाल नज़ारे नज़र नहीं आते। मनुष्य अपने विभाजनकारी नज़रिए के कारण विविधता की वहदत को बूझ नहीं पाता।

गुरु नानक और भाई मरदाना केदारनाथ से बद्रीनाथ की ओर चल पड़े।

हम अब बद्रीनाथ जा रहे हैं जो अलकनंदा नदी के किनारे हिमालय में दस हज़ार आठ सौ फुट की ऊंचाई पर आबाद है।

अमरदीप सिंह: बद्रीनाथ का यह मंदिर हिंदू मज़हब के वैष्णव संप्रदाय के सबसे पवित्र स्थलों में से एक है।

ऐसा माना जाता है कि यह स्थान पहले जैन मज़हब का पूजा स्थल था जिसे आठवीं शताब्दी में दक्षिण भारत के फ़लसफ़ी आदि शंकराचार्य द्वारा हिंदू मंदिर में परिवर्तित कर दिया गया था। तब से इस जगह के मुख्य पुजारी केरल के 'नमुद्री ब्राह्मण' रहे हैं जिन्हें 'रावल' कहा जाता है।

गुरु नानक ने कहा कि परिवर्तन प्रकृति का नियम है जिसका पालन करना पड़ता है लेकिन कुछ बुनियादी मानवीय मूल्य अटल हैं और इनसे समझौता नहीं होता।

सभ जप सभ तप सभ चतुराई ॥
ऊझड़ भरमै राह न पाई ॥
बिन बूझे को थाइ न पाई ॥
नाम बिहूणै माथे छाई ॥
(राग आसा, गुरु नानक)

जप, तप और चुस्त-चलाकियों के बावजूद जब मनुष्य दुविधा में होता है
तब वह उजाड़-बियाबान के भंवर में फंस जाता है
और कोई राह नहीं मिलता।
मन की रमज़ों को समझे बिना बुद्धि भस्म समान है।

(राग आसा, गुरु नानक)

विकास सृजन का प्राकृतिक मार्ग है। मानव मन की कमज़ोरियों के कारण मनुष्य इस वास्तविकता के साथ सहज नहीं हो सका। यदि मन को स्वस्थ करने वाले गुण व्यवहार में नहीं हैं तो भक्ति की हर विधा बेफायदा है।

उपमहाद्वीप के फ़लसफ़े के अनुसार सृष्टि के प्रत्येक कण में 'तमो', 'रजो' और 'सतो' के तीन विस्तार हैं। 'तमो' कर्म है, 'रजो' अकर्म है और 'सतो' संतुलित है। गुरु नानक ने हमें इन सब से परे चौथे विस्तार 'तुरीया' तक जाने की प्रेरणा दी जिस में द्वैत समाप्त हो जाता है और वहदत का एहसास होता है।

त्रै वरताइ चउथै घर वासा ॥
काल बिकाल कीए इक ग्रासा ॥
(राग मारू, गुरु नानक)

इस जगत का प्रसार तीन घरों में ज़ाहिर होता है। तस्कीन का निवास चौथा घर है
जो काल और अकाल के दायरे से बाहर है।
(राग मारू, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने बद्रीनाथ से कुदरती नज़ारों वाले पहाड़ी जंगली रास्तों पर सफ़र किया और उस स्थान पर पहुंचे जिस को अब रीठा साहिब कहते हैं।

हम पहाड़ों के साथ-साथ अब बद्रीनाथ से रीठा साहिब जा रहे हैं

अमरदीप सिंह: हम गुरु नानक के आने की याद में बने 'मीठा रीठा गुरुद्वारा' जा रहे हैं।

सोलहवीं सदी में इस पहाड़ी इलाके के लोगों पर नाथ जोगियों का बहुत असर था जो गुरू गोरखनाथ के पैरोकार थे उनका उपमहाद्वीप में काफी असर था क्योंकि गुरु गोरखनाथ उस दौर के सब से ज़्यादा मान्यता वाले संतो में शुमार थे। रीठा गांव नेपाल की सरहद के साथ चम्पावत इलाके में हिमालय की ऊँची पहाड़ियों में बसा हुआ है। लोधिया और रतीय नदियों के संगम पर यह शांत स्थान 'नाथ जोगियों' का डेरा था त्यागियों वाली ज़िंदगी जीते हुए नाथ जोगी रूहानियत के गूढ़ ज्ञानी थे परन्तु समय के साथ साथ यह तुनक मिज़ाज

वाले बन गए और डेरे से बाहर के लोगों से दूरी बनाने लगे थे। जब गुरु नानक और भाई मरदाना घाटी में पहुंचे तब 'नाथ जोगियों' ने उनका स्वागत नहीं किया

हम गुरु नानक की याद में बने 'गुरुद्वारा मीठा-रीठा' जा रहे हैं

हिमालय पहाड़ियों की तलहटी में रीठे के पेड़ बहुत होते हैं इसके फल की मादा औषधीय है और इसे दवाइयों के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है इसको सफ़ाई के लिए साबुन के तौर पर भी इस्तेमाल किया जाता है यह फल कड़वा होता है और खाने वाला नहीं है परन्तु एक ख़सूसी नस्ल के पेड़ों पर कड़वे और मीठे, दोनों तरह के फल लगते हैं। डेरे के नज़दीक ही नदी किनारे कड़वे और मीठे फलों वाले रीठे के पेड़ के नीचे गुरु नानक और भाई मरदाना ने आराम फ़रमाते हुए गाया

रचना राच रहे निरंकारी प्रभ मन करम सुकरमा ॥
नानक पंथ निहाले सा धन तू सुण आतम रामा ॥
बाबीहा पृउ बोले कोकिल बाणीआ ॥
सा धन सभ रस चोलै अंक समाणीआ ॥
(राग तुखारी, गुरु नानक)

निरंकार ने सृष्टि की रचना की है और उसका इसी में वास है। दिवयता के साथ गठबंधन से कर्म शुभकर्म हो जाते हैं।
नानक ने फ़रमाया कि आत्मा की दुल्हन रास्ता देखती है और हाज़रा-हज़ूर को अपनी अर्ज़ सुनने का आग्रह करती है।
आत्मा रूपी बंबीहा प्यार को आमंत्रित करता है और आत्मा रूपी कोयल खुदाई का गुणगान करती है।
आत्मा की दुल्हन विवेक का आनंद पाती है और उसी में विलीन हो जाती है। निरंकार ने सृष्टि की रचना की है और उसका इसी में वास है।
(राग तुखारी, गुरु नानक)

जैसे 'रीठे' के वृक्ष पर कड़वे और मीठे फल लगते हैं, वैसे ही विद्वान जोगियों के डेरे में बेरुखी का तजुर्बा था। गुरु नानक ने कहा कि सृष्टि के हर कण में बुराई और अच्छाई, मिठास और कड़वाहट के पक्ष शामिल हैं, सृजनहार ने यह योजनावध शिक्षा के प्रवाह को चलाने के लिए बनाई है ताकि विचार और कर्म छलनी से गुज़रते रहें।

हर इंसान को बिना किसी द्वेष या अहंकार के, विनम्रतापूर्वक दूसरों को गले लगाना चाहिए और हर हालत से सीखना चाहिए।

गुरु नानक ने जोगियों को संदेश दिया कि ज्ञान फल देता है जो बाँटने से दुगना होता है लेकिन जमाखोरी से नष्ट हो जाता है।

इस गूढ़ संदेश को सुनकर 'नाथ जोगियों' ने गुरु नानक और भाई मरदाने का स्वागत किया। दोनों ने कुछ दिन डेरे में ठहराव किया और निवासियों से विचार साँझा किये।

स्थानीय लोगों के अनुसार, 'नाथ' डेरे ने कई वर्षों तक गुरु नानक के साथ संपर्क की अपनी परंपरा को बनाए रखा और अपने मठ में गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना की। यह परंपरा उन्नीस सौ साठ के दशक तक कायम रही जब 'मठ' के पास 'मीठा-रीठा गुरुद्वारा' बनाया गया।

हम 'मीठा-रीठा गुरुद्वारा' के नज़दीक 'मठ' में जा रहे हैं

भूवनाथ गोस्वामी: मेरे दादा और हमारे अन्य पूर्वज इस स्थान पर सदियों से पूजा करते थे। यहां चढ़ावा चढ़ता था, भंडारा चलता था। भागवत और शिव पुराण का पाठ होता था, गुरु नानक के ग्रंथ का भी पाठ किया जाता था। हमारा इतिहास तो एक ही है। मुझ को कान छिदवाये हुए पांच साल हो गए हैं। हम यहां पूजा पाठ करते हैं। मेरे बच्चे है। मैं गुरुद्वारे में भी जाता हूं। गुरुमुखी हमारा इतिहास है, हम इसे पूजा पाठ के दौरान पढ़ते हैं।

इस स्थान के मीठे और कड़वे रीठों का स्वाद चखने के बाद, मैं अपने व्यक्तित्व के मीठे और कड़वे पहलुओं के बारे में सोच रहा हूं और सोच रहा हूं कि मैं उनसे क्या सीख सकता हूं।

प्रभ दूर न होई घट घट सोई तिस की नार सबाई ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

कायनाती ऊर्जा कभी दूर नहीं होती। उसका वास हर जीव में है।
सभी उसके प्यारे हैं।
(राग सूही, गुरु नानक)

सृष्टि के हर कण में जलवा है। यह हम में भी है। स्थिति का मूल्य इसके घटित होने में है। जब सलाहियत पैदा होती है तो प्यारे की तरह निश्चय बन जाती है। जब रद्द हो जाती है तो यह दुश्मन की तरह हमारे ख़िलाफ़ काम करती है।

रीठा साहिब की पहाड़ियों से उतरने के बाद, गुरु नानक और भाई मरदाना तराई के इलाके में देवहा नदी के तट पर स्थित शहर गोरखमत्ता पहुंचे। इस शहर का मौजूदा नाम नानकमत्ता है।

हम अब नानकमत्ता जा रहे हैं और रास्ते में हमारा ठिकाना नानक सागर सरोवर है।

अमरदीप सिंह: देवोहा नदी के तट पर स्थित इस शहर को पहले गोरखमता या सिद्धमता कहा जाता था। गुरु नानक के यहां आने के सम्मान में यह शहर अब नानकमत्ता के नाम से जाना जाता है। देवोहा नदी पर जो बांध बनाया गया उसका नाम नानक सागर है।

इस स्थान पर गुरु नानक के आने की याद में सरकार ने नानक सागर सरोवर के अंदर कुंए के रूप में यादगार बनाई है।

अब हम गुरु नानक की याद में बने मुख्य स्थान गुरुद्वारा नानकमत्ता साहिब जा रहे हैं।

गुरु नानक के श्रद्धालु और पैरोकार इस स्थान पर सदियों से आ रहे हैं। 'खुलासत-उत-तवारीख़' नामक फ़ारसी लिखत में सोलह सौ पंचानबे में यह दर्ज किया गया था की "नानक के शिष्य और भक्त बड़ी संख्या में अपनी भक्ति और सम्मान के फूल नानकमत्ता में चढ़ाने के लिए आते हैं।"

इस गुरुद्वारे का इंतज़ाम उन्नीस सौ सैंतीस तक महंतों के हाथ में था और उसके बाद यह एक स्थानीय समिति के हाथ में आ गया। यह गुरुद्वारा धार्मिक इत्तेफाक की शानदार मिसाल है क्योंकि इस इमारत के विस्तार के लिए मुस्लिम समुदाय के नवाब महिंदी अली ख़ान ने वित्तीय सहायता प्रदान की थी।
जब गुरु नानक ने गोरखमत्ता का दौरा किया तो यहां 'नाथ जोगियों' की बड़ी आबादी थी जो गुरु गोरखनाथ को मानते थे। समय के साथ, 'नाथ जोगियों' की आबादी इस क्षेत्र से पलायन कर गई। गुरु नानक की यंहा आने की याद में, इस शहर का नाम अब नानकमत्ता है।

इस स्थान पर गुरु नानक और नाथ जोगियों का आपस में रूहानी विचारों का आदान-प्रदान हुआ था

'जोगियों' ने गुरु नानक से उनके मज़हब और उन्हें इस रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करने वाले गुरु का नाम और सदाकतनामा पूछा।

गुरु नानक ने जवाब दिया कि मानवता उनका मज़हब है और वह बेख़्ता हाज़रा-हज़ूर से शिक्षा लेते हैं।

कउण तराजी कवण तुला तेरा कवण सराफ बुलावा ॥
कउण गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुल करावा ॥
मेरे लाल जीउ तेरा अंत न जाणा ॥
तूँ जल थल महीअल भरिपुर लीणा तूँ आपे सरब समाणा ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

मैं किस तकड़ी, किस तोल और किस सराफ़ को बुलाऊँ?
मैं किस गुरु से दीक्षा लूँ और किस से तेरा मूल्य लगवाऊं?
मेरे लाल जीओ मैं आप जी का अंत नहीं पा सकता।
आपका जल, थल, और आकाश में वास है। आप हर चीज़ में विराजमान हो।
(राग सूही, गुरु नानक)

उन्होंने कहा, “मैं किस तराजू, किस तोल और किस पारखी को आमंत्रित करूं? मैं किस संरक्षक से आपका मूल्य मांगूं क्योंकि मेरे सर्वव्यापी लाल की सीमा कोई नहीं जानता? मैं केवल विचार के तराजू, सूरत के संतुलन और निस्वार्थ सेवा के माध्यम से लाभार्थी बन सकता हूं। मेरे पास हाज़रा-हज़ूर की अनंत महिमा को मापने के लिए तराजू नहीं है।"

गुरु नानक का दिलचस्प जवाब सुनकर मंत्रमुग्ध 'जोगियों' ने अनुमान लगाया कि वह डेरे में शामिल होने के लिए उत्सुक होंगे। उन्होंने गुरु नानक को जोगियों वाला भेष धारण करने के लिए आमंत्रित किया। गुरु नानक ने शांति से उत्तर दिया,

जोग न खिंथा जोग न डंडै जोग न भसम चड़ाईऐ ॥
जोग न मुंदी मूँड मुडाइऐ जोग न सिंडी वाईऐ ॥
अंजन माहि निरंजन रहीऐ जोग जुगत इव पाईऐ ॥
गली जोग न होई ॥

एक द्रसट कर समसर जाणै जोगी कहीऐ सोई ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

जोग फटेहाल कपड़े पहनना और डंडा पकड़ना नहीं है। जोग शरीर पर राख मलना नहीं है।
जोग कानों में मुंदरा डालना और सिर मुंडवाना नहीं है। जोग ना ही शंख बजाना है।
जोग दुनियादारी के झमेलों में रहते हुए बेलाग रहना है। जोगी होने का यहीं रास्ता है।
कुछ शब्दों के उच्चारण से किसी को जोग नहीं मिल जाता।
वो एहसास वाला जो सबको बराबर जाने वो ही जोगी है।
(राग सूही, गुरु नानक)

लिबासों से मुक्ति नहीं मिलती। इसके लिए दुनियादारी निभाते हुए पूरी सृष्टि को एक जानना पड़ता है और मोह-माया के जंजाल से बचना पड़ता है। गुरु नानक ने 'जोगियों' को संदेश दिया कि कामना की मौत की इच्छा रखें और सदाचारी जीवन बसर करें।

मैं अपने आंतरिक संयम को कायम करने के लिए संघर्ष करता हूं और खुद को समझाता हूं कि संतुलन हासिल करने का तरीका क्या है।

अंजन माहि निरंजनि रहीऐ जोग जुगति इव पाईऐ ॥
(राग सूही, गुरु नानक)

अशुद्धता में रहते हुए सोच और कर्म को पाक रखते हुए ज़िंदगी को जीने का यह मार्ग संतुलन बनाऐ रखता है।
(राग सूही, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ५: तत्व-ज्ञान (ज्ञान का सारांश)

ये चर्चा संकेतक गुरु नानक की हिमालय यात्रा के समृद्ध ऐतिहासिक और दार्शनिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हैं। ऐतिहासिक रूप से, वे विभिन्न स्थानों पर प्रभावशाली नाथ पंथी संप्रदाय के साथ उनकी बातचीत को उजागर करते हैं, स्मारक स्थलों के विकास को दर्शाते हैं और उनकी यात्राओं से उत्पन्न हुए स्थायी अंतरधार्मिक संबंधों को चिन्हित करते हैं। दार्शनिक रूप से, वे उनके समावेशी व्यापक रुहानी दृष्टिकोण, सच्चे योगिक अभ्यास की उनकी परिभाषा, परम एकता के ढांचे में द्वैत को स्वीकार करने की उनकी दृष्टि और बाहरी अनुष्ठानों की आलोचना के बजाय आंतरिक परिवर्तन की उनकी वकालत की व्याख्या करते हैं। ये सभी बिंदु मिलकर यह समझने में मदद करते हैं कि गुरु नानक की हिमालय यात्रा न केवल एक भौगोलिक अभियान थी बल्कि उस समय की रुहानी परंपराओं के साथ एक गहन दार्शनिक संवाद भी थी।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. नाथ पंथी संप्रदाय का गुरु नानक के समय में ऐतिहासिक महत्व क्या था?

एपिसोड नाथ पंथी संप्रदाय का वर्णन दसवीं शताब्दी के प्रभावशाली रुहानी रहनुमा, गुरु गोरखनाथ के अनुयायियों के रूप में करता है, जिनका भारत, नेपाल, पाकिस्तान और अफगानिस्तान में व्यापक प्रभाव था। इन्हें 'योगी' (संन्यासी) या 'सिद्ध' (तांत्रिक) भी कहा जाता था, और कुछ के कान की लोब काटकर मोटे कान के कुंडल पहनने के कारण उन्हें 'कानफटा' (कटा-कान वाले) भी कहा जाता था। एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि गुरु गोरखनाथ और उनके पूर्ववर्ती मत्स्येंद्रनाथ, गुरु नानक से बहुत पहले के समय के थे। हालांकि, 'जनमसाखी' कलाकृतियों में, गुरु नानक को अक्सर दोनों के साथ संवाद करते हुए चित्रित किया गया है; यह चित्रण 'कानफटा योगी' संप्रदाय के उत्तराधिकारियों के साथ गुरु नानक की बातचीत का प्रतीक है। इस संप्रदाय के व्यापक प्रभाव ने हिमालय में अपनी यात्राओं के दौरान गुरु नानक द्वारा देखे गए धार्मिक परिदृश्य को कैसे आकार दिया?

२. हिमालयी क्षेत्र की धार्मिक भूगोल ने गुरु नानक की यात्रा को कैसे प्रभावित किया?

एपिसोड में गुरु नानक द्वारा भ्रमण किए गए कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों का वर्णन किया गया है। कोटद्वार को 'नाथ पंथी' संप्रदाय के पूजा स्थल के रूप में दर्शाया गया है। केदारनाथ को शैवों के चार तीर्थ

स्थलों में से एक बताया गया है, जहां 'पांडवों' ने भगवान शिव से क्षमा मांगी थी। बद्रीनाथ को वैष्णव संप्रदाय के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक बताया गया है, जो प्रारंभ में जैन धर्म का पूजा स्थल था और आठवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य द्वारा इसे वैष्णव तीर्थ स्थल में परिवर्तित किया गया। इन विविध धार्मिक स्थलों और ऐतिहासिक परिवर्तनों ने गुरु नानक की धारणाओं और संवादों की पृष्ठभूमि कैसे प्रदान की?

३. गुरु नानक की हिमालयी यात्रा के स्मरण के लिए कौन से प्रमाण मौजूद हैं?

एपिसोड में गुरु नानक के मार्ग के कई स्मारक स्थलों का उल्लेख किया गया है। कोटद्वार में, गुरुद्वारा चरणपादुका अस्तित्व में था, लेकिन १८८४ में लिखी गई तारा सिंह नरोतम की पुस्तक 'गुर तीरथ संग्रह' के अनुसार, यह स्थल अब मौजूद नहीं है। श्रीनगर में, गुरु नानक की यात्रा की स्मृति में गुरुद्वारा चरणपादुका बनाया गया था, लेकिन १८०३ की बाढ़ में नष्ट हो गया। रीठा साहिब में, १९६० के दशक में मीठा रीठा गुरुद्वारा बनाया गया था, और नानकमत्ता में, सरकार ने नानक सागर जलाशय में एक कुएं के रूप में एक स्मारक बनाया और गुरुद्वारा नानकमत्ता साहिब गुरु नानक की यात्रा के स्मरण का मुख्य स्थल है। ये स्थल हिमालय क्षेत्र के लोगों पर गुरु नानक के प्रभाव को कैसे दर्शाते हैं?

४. गोरखमत्ता में कौन सा ऐतिहासिक परिवर्तन हुआ, और इसका क्या महत्व है?

एपिसोड के अनुसार, देवोहा नदी के किनारे स्थित यह नगर पहले गोरखमत्ता या सिद्धमत्ता के नाम से जाना जाता था। गुरु नानक की इस स्थान की यात्रा के प्रति श्रद्धा स्वरूप अब इसे नानकमत्ता कहा जाता है। देवोहा नदी पर बना जलाशय अब नानक सागर कहलाता है। ऐतिहासिक रिकॉर्ड इस स्थान के महत्व की पुष्टि करते हैं, क्योंकि १६९५ में लिखे गए फारसी ग्रंथ 'खुलासत-उत-तवारीख' में यह वर्णित है कि नानकमत्ता वह स्थान है जहां गुरु नानक के शिष्य और भक्त बड़ी संख्या में एकत्र होकर श्रद्धा और भेंट अर्पित करते हैं। गोरखमत्ता (जो गुरु गोरखनाथ से संबंधित था) से नानकमत्ता में इस नाम परिवर्तन से इस क्षेत्र के धार्मिक परिदृश्य पर गुरु नानक की यात्रा के ऐतिहासिक प्रभाव का क्या खुलासा होता है?

५. गुरु नानक के स्मारक स्थलों का प्रबंधन समय के साथ कैसे विकसित हुआ?

एपिसोड में यह जानकारी दी गई है कि गुरु नानक की यात्रा के स्मारक स्थलों का प्रबंधन सदियों में कैसे किया गया। नानकमत्ता में, १९३७ से पहले इस गुरुद्वारे का प्रबंधन 'महंतों' (मुख्य पुजारियों) द्वारा किया जाता था और उसके बाद इसका प्रबंधन एक स्थानीय समिति ने संभाल लिया। एपिसोड यह भी बताता है कि यह गुरुद्वारा अंतरधार्मिक सद्भाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण है, क्योंकि इसके परिसर के विस्तार के लिए एक मुस्लिम धर्म के व्यक्ति नवाब मेंहदी अली खान द्वारा अनुदान दिया गया था। रीठा साहिब में,

वर्षों तक 'नाथ' संप्रदाय की परंपरा गुरु नानक से अपनी संबद्धता बनाए रखी और अपने 'मठ' (मंदिर) में 'गुरु ग्रंथ साहिब' को स्थापित किया। इन स्थलों के प्रबंधन के पैटर्न विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच गुरु नानक की यात्राओं के बहुत बाद तक बदलते संबंधों को कैसे दर्शाते हैं?

६. नाथ परंपरा और सिख परंपरा के बीच निरंतर अंतरधार्मिक संबंधों के कौन से प्रमाण मौजूद हैं?
एपिसोड में रीठा साहिब स्थल पर भुवनाथ गोस्वामी की गवाही प्रस्तुत की गई है, जो कहते हैं कि मेरे पितामह और पूर्वज वर्षों से इस स्थल पर प्रार्थना सेवाएँ करते आ रहे हैं। 'गुरु ग्रंथ साहिब' का पाठ भी किया जाता था। हमारा इतिहास आपस में जुड़ा हुआ था। मैं भी गुरुद्वारे में जाता हूँ। 'गुरमुखी' लिपि भी मेरी विरासत का हिस्सा है। हम आज भी धार्मिक अनुष्ठानों में 'गुरमुखी' में पढ़ते हैं। यह समकालीन विवरण विशिष्ट भौगोलिक स्थानों में नाथ परंपरा और सिख परंपरा के बीच स्थायी ऐतिहासिक संबंधों के बारे में क्या उजागर करता है, और यह गुरु नानक की मूल बातचीत से कैसे संबंधित है?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक द्वारा छह भारतीय दार्शनिक प्रणालियों की स्वीकार्यता उनकी रुहानी ज्ञान की दृष्टि को कैसे दर्शाती है?
एपिसोड गुरु नानक के उस सबद से आरंभ होता है जिसमें वे छह दार्शनिक प्रणालियों का उल्लेख करते हैं: छह दर्शन, छह आचार्य, छह सिद्धांत (भारतीय रुहानी परंपरा में)। सभी आचार्यों का आचार्य एक ही दिव्य शक्ति है जो विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। एपिसोड आगे बताता है कि गुरु नानक द्वारा सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत जैसी छह भारतीय दार्शनिक प्रणालियों की स्वीकृति यह दर्शाती है कि वे विचारों की स्वतंत्रता का सम्मान करते थे। हालांकि, वे सर्वोपरि रूप से एकता के सिद्धांत को ही प्रमुख मानते थे। यह दार्शनिक दृष्टिकोण विभिन्न दर्शनों की समझ विकसित करने के साथ-साथ दिव्य सत्य की अंतिम एकता को कैसे उजागर करता है?

२. गुरु नानक सच्ची योग साधना की अवधारणा को कैसे पुनर्परिभाषित करते हैं?
जब योगियों ने गुरु नानक को अपने संन्यासी आचार और वेश-भूषा अपनाने का निमंत्रण दिया, तो गुरु नानक ने एक सबद के माध्यम से पारंपरिक रुहानी अनुशासन की सामान्य समझ को चुनौती दी: योगी का मार्ग फटे-पुराने वस्त्र पहनने या दंड धारण करने में नहीं है। योगी का मार्ग शरीर पर भस्म लगाने में नहीं है। योगी का मार्ग कानों में कुंडल पहनने या सिर मुँडाने में नहीं है। योगी का मार्ग बाजा बजाने में नहीं है। संसारिक गतिविधियों के बीच अप्रभावित रहना ही योगी बनने का

मार्ग है। वे आगे कहते हैं कि अशुद्धियों के बीच, अपने विचार और कर्म में सच्चे बने रहना ही 'योग' (जीवन का मार्ग) है, जिससे आत्मबोध और संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। यह नया क्रांतिकारी विचार रुहानी अनुशासन की हमारी धारणा को कैसे बदलता है, जो बाह्य आडंबरों की बजाय आंतरिक स्थिति पर केंद्रित है?

३. सृष्टि और विनाश के संबंध में गुरु नानक की दार्शनिक स्थिति क्या है?

एपिसोड गुरु नानक के इस अनुभवजन्य अवलोकन को प्रस्तुत करता है कि जिस स्रोत से हम उत्पन्न होते हैं, अंततः उसी में विलीन हो जाते हैं। सृष्टि के प्रत्येक तत्व में सत्य समाया हुआ है। कथावाचक बताते हैं कि अस्तित्व की प्रकृति द्वैत चक्र – सृष्टि और विनाश – को स्वीकार करने और आत्मसात करने से जुड़ी है। विनाश में एक नई सृष्टि निहित होती है और इसके विपरीत भी यही सत्य है। बाद में, हिंदू त्रिमूर्ति की अवधारणा पर चर्चा करते हुए, एपिसोड में बताया गया कि गुरु नानक ने 'ओंकार' (सर्वव्यापी सृजनात्मक ऊर्जा) से पहले '੧' अंक लगाया, जिससे एक अविभाज्य शक्ति का प्रतिनिधित्व किया जो सृजन, पालन और संहार करती है। इसे उनके सबद द्वारा और अधिक सुदृढ़ किया गया है कि सर्वव्यापी शक्ति ही वास्तविकता है; इसके बाहर कोई अन्य सत्य नहीं। जो सृष्टि को रचता है, वही उसे समाप्त भी करता है। सृजन और विनाश को एकीकृत प्रक्रियाओं के रूप में देखने की यह दार्शनिक समझ गुरु नानक की व्यापक 'एकता' की अवधारणा को कैसे दर्शाती है?

४. तीन गुणों और 'तुरीया' के बारे में गुरु नानक की व्याख्या उनकी दार्शनिक दृष्टि को कैसे उजागर करती है?

एपिसोड बताता है कि भारतीय दर्शन के अनुसार, 'तमो', 'रजो' और 'सतो' – ये तीन गुण सृष्टि के सभी तत्वों में व्याप्त हैं। 'तमो' निष्क्रियता है, 'रजो' सक्रियता है और 'सतो' संतुलन है। गुरु नानक व्यक्ति को 'तुरीया' नामक चौथे आयाम तक पहुँचने के लिए प्रेरित करते हैं, जहाँ द्वैत का त्याग कर 'एकता' का अनुभव किया जाता है। इसे उनके सबद द्वारा स्पष्ट किया गया है कि अस्तित्व तीन अवस्थाओं में प्रकट होता है; चौथी अवस्था में चेतना स्थित होती है। यह जन्म और मृत्यु को एक समान स्वीकार करती है। यह दार्शनिक ढाँचा रुहानी विकास और द्वैतवादी सोच से पार जाने की प्रक्रिया को समझने के लिए कैसे एक मार्गदर्शन प्रदान करता है?

५. मीठे और कड़वे रीठा वृक्ष की उपमा गुरु नानक के द्वैत को स्वीकार करने के तर्कशील दृष्टिकोण को कैसे दर्शाती है?

एपिसोड में वर्णन किया गया है कि रीठा साहिब में, गुरु नानक एक 'रीठा' वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे, जिसकी शाखाओं पर मीठे और कड़वे दोनों प्रकार के फल लगे थे। संन्यासी समुदाय की शत्रुता के उत्तर में, इस वृक्ष के उदाहरण द्वारा गुरु नानक ने समझाया कि सृष्टि के प्रत्येक तत्व में सकारात्मक और नकारात्मक, मिठास और कटुता दोनों होती हैं, जिन्हें सृजनहार ने इसलिए गढ़ा है ताकि व्यक्ति अपने विचारों और कर्मों को शुद्ध करना सीख सके। कथावाचक आगे बताते हैं कि किसी भी परिस्थिति का मूल्य इस पर निर्भर करता है कि हम उसे कैसे देखते हैं। जब उसे स्वीकार किया जाता है, तो वह प्रिय के समान सकारात्मक हो जाती है। जब उसे अस्वीकार किया जाता है, तो वह शत्रु के समान प्रतिकूल बन जाती है। यह प्राकृतिक उपमा गुरु नानक के उस दृष्टिकोण को कैसे encapsulate करती है, जिसमें वे जीवन के सभी पहलुओं – सुखद और अप्रिय – को अपनाने और उनसे सीखने पर बल देते हैं?

६. **तीर्थयात्रा और अनुष्ठानों द्वारा क्षमा प्राप्त करने की अवधारणा पर गुरु नानक की दार्शनिक आलोचना क्या है?**

केदारनाथ में, जो एक ऐसा स्थल है जहाँ यात्री कठिन तपस्या के माध्यम से क्षमा प्राप्त करने और आत्मज्ञान पाने का प्रयास करते हैं, एपिसोड यह प्रश्न उठाता है: क्या केवल तीर्थस्थलों की यात्रा से ही क्षमा प्राप्त की जा सकती है? गुरु नानक का उत्तर है कि हमारे कर्मों के परिणाम निश्चित होते हैं। जैसा बोएंगे, वैसा ही काटेंगे। एपिसोड यह स्पष्ट करता है कि हमारे इरादे ही सकारात्मक या नकारात्मक परिणाम उत्पन्न करते हैं। गुरु नानक कहते हैं कि जैसे हम अपने कर्मों का फल भोगते हैं, वैसे ही क्षमा भी आंतरिक प्रयासों से प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार, हरिद्वार में, उन्होंने पूर्वजों को जल अर्पण करने की प्रथा को चुनौती देते हुए निष्फल अनुष्ठानों की व्यर्थता को दर्शाया। यह दार्शनिक दृष्टिकोण रुहानी शुद्धिकरण की धारणा को बाह्य कृत्यों से आंतरिक रूपांतरण की ओर कैसे परिवर्तित करता है?

७. **गुरु नानक का योगियों को दिया गया उत्तर उनके दिव्य मार्गदर्शन की समझ को कैसे दर्शाता है?**

जब योगियों ने गुरु नानक से उनके धर्म और रुहानी गुरु के बारे में पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया कि मानवता मेरा धर्म है और मैं अचूक सर्वव्यापी से सीखता हूँ। वे आगे कहते हैं कि मैं किस तराज़ू, किन बाटों और किस परीक्षक को पुकारूँ? मैं किस गुरु से मार्गदर्शन लूँ और अपनी कीमत आँकूँ? हे मेरे प्रिय, मैं आपकी सीमाओं से अनभिज्ञ हूँ। आप जल, थल और आकाश में स्थित हैं। आप स्वयं ही सर्वव्यापी हैं। एपिसोड में गुरु नानक यह अवलोकन करते हैं कि कोई भी सर्वव्यापी सत्ता की विशालता को पूर्णतः नहीं समझ सकता। यह रुहानी मार्गदर्शन पर उनकी दार्शनिक स्थिति धार्मिक दीक्षा और रुहानी ज्ञान के पारंपरिक पदानुक्रम को कैसे चुनौती देती है?

८. ज्ञान को संचित करने बनाम साझा करने पर गुरु नानक की दार्शनिक स्थिति क्या है?

रीठा साहिब में, नाथ योगियों के विरोध का सामना करने के बाद, गुरु नानक ने संन्यासियों को यह उपदेश दिया कि ज्ञान फलदायी होता है। यह तब बढ़ता है जब इसे साझा किया जाता है, लेकिन संचित करने पर यह क्षीण हो जाता है। इस शिक्षा के परिणामस्वरूप संन्यासियों ने उनका स्वागत किया और उनके साथ संवाद स्थापित किया। यह ज्ञान और बुद्धि संबंधी यह सिद्धांत उस धारणा को कैसे चुनौती देता है कि केवल कुछ ही व्यक्ति दार्शनिक अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं, और यह गुरु नानक की इस मान्यता का समर्थन कैसे करता है कि प्रत्येक व्यक्ति में रुहानी ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता है?